P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थान में ''ख्याल'' की विविध रूपों में अभिव्यक्ति एवं प्रचलन

शिवाँगी श्रीमाली
सहायक आचार्य,
संगीत विभाग,
माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी कॉलेज,
टाउनहॉल रोड, उदयपुर

सारांश

राजस्थान में ख्याल के विविध रूप अलग–अलग क्षेत्रो में प्रचलित है। विशेषकर अन्य क्षेत्रों में ख्याल 'लोकनाट्य' के रूप में मिलता है। राजस्थान के पूर्वांचल में कुछ स्थानों को अपवाद स्वरूप छोड़ कर शेष स्थानों में लावनी के दोनों रूप 'कलंगी–तुर्रा' प्रचलित हैं। करौली क्षेत्र में भी ये दोनों प्राप्त हैं।

राजस्थान के पूर्वी आंचल में ख्याल सर्वत्र प्रचलित हुआ। भक्ति आंदोलन के समय ब्रजप्रदेशान्तर्गत मथुरा–वृन्दावन भक्ति के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। समस्त उत्तरी भारत के भक्ति आन्दोलन के साथ–साथ दक्षिण से चल कर ख्याल–गायकी भी ब्रजप्रदेश में आ गई। भक्ति ने काव्य और संगीत का साहचर्य प्राप्त किया और 'ख्याल' के प्रचार और प्रसार हेतु उचित स्थान प्राप्त हो गये। ब्रजप्रदेश से मुख्यतया भरतपुर, अलवर, वैर और करौली में ख्याल खूब जमा। प्रमुख नगरों में तो यह 'कलंगी–तुर्रा' के ख्याल की श्रेणी में समाहत हुआ लेकिन इनसे संलग्न गांवों में 'अली–ए–हो' की टेर से युक्त ख्याल जिसे बहुत कुछ इसकी गायन–प्रणाली के आधार पर 'हेला का ख्याल' कहा जाता है– प्रचलित हुआ। करौली क्षेत्र में ये दोनों प्रणालियां अपने प्रारम्भिक रूप से आज तक प्रचलित हैं।[1]

मुख्य शब्द : लोकवृन्दगायन, लोकगीत, लोकनाट्य, लोकसंगीत, संगीत, रंगमंच, राग, ताल, स्वर।

प्रस्तावना

लोकवृन्दगायन लोक जीवन एवं लोकधुनों पर आधारित मानव के मन के साधारण से भावों को स्वरचित माध्यम से उत्पन्न होने वाला लोकसंगीत है। लोक अर्थात् जनता के मन में उद्वेलित होने वाली भावना एवं स्वयं जनता के मनोरंजन का एक सुखद माध्यम मात्र है।

लोकवृन्दगायन सुर–लय–ताल को सामंजस्यता के साथ प्रस्तुत करने का एक माध्यम मात्र है। ''संगीत'' शब्द के साथ ''लोक'' शब्द का प्रयोग किए जाने का काल राजस्थान में बीसवीं शताब्दी के चतुर्थ दशक से माना जाता है। वैदिक ऋचाओं की तरह लोग संगीत या लोकगीत अत्यंत प्राचीन एवं मानवीय संवेदनाओं के सहजतम् उद्गार है।

संगीतमयी प्रकृति जब गुनगुना उठती है, लोकगीतों का स्फुरण हो उठना स्वाभाविक ही है। सामूहिक रूप से गाए जाने वाला संगीत ''लोकवृन्दगायन'' कहता है। लोक जीवन की जैसी सरलतम, नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोकनाट्य, लोकसंगीत, लोक गाथाओं में मिलता है, वैसा अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। लोक का अभिप्राय सर्वसाधारण जनता से है, जिसकी व्यक्तिगत पहचान न होकर सामूहिक पहचान है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

लोकवृन्दगायन किसी काल विशेष या कवि विशेष की रचनाएँ नहीं है, दरअसल एक ही गीत तमाम कंठों से गुजर कर पूर्ण हुआ है। महिलाओं का लोकवृन्दगायन को जीवित रखने में पूर्ण योगदान रहा है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य, लोकव्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी को सहज ही उत्पन्न करता है, वही ''लोकवृन्दगायन'' है।

अध्ययन का उद्देश्य

लोकवृन्दगायन एवं राजस्थान की ख्याल परम्परा को आज की युवा पीढ़ी के समक्ष लाने का और राजस्थान के ख्यालों अर्थात् खेलों के कई रूपों को उजागर करने का सूक्ष्म प्रयास किया गया है।

साहित्यावलोकन

कल्याण प्रसार शर्मा, देवीलाल सामर, रामनारायण अग्रवाल, महेन्द्र भानावत आप सभी ने लोक परम्परा, लोक साहित्य एवं लोकनाट्यों की परम्परा एवं राजस्थान के लोकनाट्य पर अपनी पुस्तक को लोककला मंडल उदयपुर राजस्थान में प्रकाशित करवाकर लोकसंगीत की लुप्त होती परम्परा में अपना अथक योगदान दिया है।

ख्यालों का इतिहास 200–250 वर्ष से अधिक पुराना नहीं है। सत्रहवीं शताब्दी मे राजस्थान में ख्यालों की एक लोकधर्मी परंपरा प्रांरभ हुई जिसका क्षेत्र काव्य रचना तथा किसी ऐतिहासिक, पौराणिक व्यक्ति से संबधित काव्य रचना की प्रतियोगिता तक ही सीमित था। यही काव्य प्रतियोगिता आगे चलकर प्रथम बार 18वीं शताब्दी में रंगमंचीय ख्यालों के रूप में राजस्थान में परिवर्तित हुई। यही आज राजस्थान में अनेक रूपों में लोकानुरंजन कर रही है। यह ख्याल सर्वप्रथम कल्पना एवं विचारों से उत्पन्न कवित्व रचना का ही दूसरा नाम था। परन्तु जब से यह रंगमंच पर खेल–तमाशे के रूप में खेला जाने लगा, यह ख्याल कहलाया। जन–साधारण में जो मध्य–काल में रास, चर्चरी, फागु, समस्यापूर्ति, श्लोक, गेर, डांडिया नृत्य, घुंघरू नृत्य रमे व खेले जाते थे। वही बाद में रमत, रामत, खेल या तमाशे के रूप में प्रकट हुए। शनैः–शनैः इनकी कई रम्मतें बन गई जो मांच, स्वांग, नौटंकी, रासधारी आदि के रूप में प्रसिद्ध हुई। सांग–स्वांग, गीत संगीत आदि नौटंकी के विविधनाम है। कहीं–कहीं नौटंकी के ख्याल को भी ख्याल कहा गया है।

ख्याल का अर्थ है खेल। राजस्थान में ख्यालों के कई रूप प्रचलित है। कुचामणी ख्याल एवं चिड़ावा ख्याल के साथ अलीबख्शी ख्याल, बीकानेरी रम्मतें एवं जैसलमेरी रम्मतें भी इसी लोकनाट्य रूप का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस लोकनाट्य रूप में लोक प्रसिद्ध किसी एक चरित्र के जीवन की गाथा को व्यक्त किया जाता है। संपूर्ण लोकनाट्य गेय रूप में होता हैं किन्तु बीच–बीच में गेय पक्ष को अरथाने के लिये गद्य का प्रयोग भी किया जाता है। लोकनाट्य परम्परा में यह एक ऐसा लोकनाट्य रूप है जिसमें रचियता अज्ञात नहीं होता। इसका कथाक्रम बंधी बंधाई परिपाटी के अनुसार ही चलता है।

बीकानेर में ख्यालों की अपनी परंपरा रही है। ख्यालों में किसी भी प्रकार की सर्ग–बद्ध कथा नहीं रहती। इसमें पहले पहल गणेशजी की स्तुति, प्रार्थना रहती है। फिर रामसापीर की स्तुति, फिर लावणी, चैमासा और अंत में ख्याल रहता है। रम्मतें और ख्याल आदि फाल्गुण, होली के महीने में ही हुआ करते हैं। ख्यालों में उस समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि कुरितियों को लेकर उन पर तीखा व्यंग किया जाता है। ख्यालों में दो घोड़ो पर दो असवार और दो मेरिया/स्त्री पात्र प्रधानतः रहते है। ख्यालों की रचनाएँ हर वर्ष नए–नए विषयों के लिये रहती है। जो एक ख्याल किसी एक विशेष वर्ग में गाया जाता है, वही ख्याल आने वाले दूसरे वर्ष में फिर नहीं गाया जाता। और सही समस्या चैमासा, लावणी आदि को भी लेकर रहती है। ख्यालों वाली रम्मतों में हर साल नये–नये प्रकार के ख्याल, चौमासा और लावणियों आदि रहती हैं।[2]

शेखावाटी के ख्यालों का इतिहास लगभग 200 वर्ष पुराना है। सबसे पहले फतेहपुर के प्रहलादी राम पुरोहित तथा झाली राम निर्मल ने अनेक ख्याल लिखे थे तथा अपनी मंडली बनाकर मारवाड़ी रंगत पर उनका अभिनय भी किया था। पेशेवर मंडली का रूप उन्होंने अपनी मंडली का नहीं दिया। उनके ख्यालों का प्रभाव शेखावाटी के तत्कालीन जागीरदार, सेठ साहूकार तथा जनमानस पर पड़ा और उन्हें लोकप्रियता प्राप्त हुई।

चिड़ावा के नानूराम राणा इस ख्याल मंडली के सदस्य थे किन्तु आगे चलकर उन्होंने एक अलग मंडली बना ली थी। नानूराम राणा को संगीत के प्रति प्रारम्भ से ही लगाव था। गुरु की कृपा से वे संगीतज्ञ, अभिनेता, नर्तक गायक और ख्यालों के रचनाकार बन गए। इनकी रचनाएँ ईश, सरस्वती और गणेश वन्दना से प्राप्त होती थी। अपने ख्यालों में गुरुजनों को स्थान–स्थान पर याद किया है–

श्री पंडित हरिदत्त जी मुजकूं काव्य का तंत पढ़ाया है।
गुरु कर कर किरपा मेरा अज्ञान काम छुटवाया है।
विप्र गुरु स्योबक्श राय मुकझूं गाना बतलाया है।
गुरु गोमंदराय जी मुझे नृतकारी भेद बताया है।
गुन गुन का मुरसद करना ये वेदों में फरमाया है।''[3]

–सुल्तान बादशाह को ख्याल।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ख्याल लोकनाट्य का उद्भव 18वीं शताब्दी के मध्य में माना जाता है लेकिन उससे पहले लोकनाट्यों की लंबी परंपरा रही है। 1866 में रॉब्सन द्वारा कलाकारों से सुन–सुन कर लिखे गये ख्यालों की पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के बाद बोम्बे, पूना, दिल्ली, बनारस और विशेष रूप से कलकत्ता से ख्यालों की कई पुस्तिकाएं प्रकाशित होने लगी थी। इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन से अनुमान होता है कि कुछ ख्याल मण्डलियां और कलाकार इन स्थानों पर प्रदर्शन करने आये होंगे। ख्याल शब्द का प्रयोग हाथरस के कवि–नाट्यलेखन इन्द्रमल द्वारा संगीत, स्वाँग और सांग के समानार्थी शब्द के रूप में किया गया था। इनका लिखा ख्याल दोहा–चौबोला और स्वांग शैली में है। कुछ संगीत रचनाएं ऐसी मिलती हैं जिनके प्रचार–कथनों और कवि परिचयों में इन रचनाओं को ख्याल कहा गया है। इससे पता चलता है कि ख्याल परंपरा को स्वांग नाट्य प्रदर्शनों में शामिल कर लिया गया था और ख्याल काव्य का ख्याल नाट्य में विलय हो गया था।

फारसी भाषा में ख्याल का अर्थ है विचार या कल्पना। राग के नियमों का पालन करते हुए अपनी इच्छा या कल्पना से विविध आलापों, तानों का विस्तार करते हुए, एक ताल, त्रिताल, झपताल, आडा, चौताल इत्यादि तालों में गाते हैं। ख्यालों के गीतों में श्रृंगार रस का प्रयोग अधिक पाया जाता है। ख्याल की गायकी में जलदता, गिटकटी इत्यादि का प्रयोग शोभा देता है और स्वर–वैचित्र्य तथा चमत्कार पैदा करने के लिये ख्यालों में तरह–तरह की तानें ली जाती है।

जयपुर के ख्यालियों का घराना है, जिसके जन्मदाता के रूप में मनरंग को याद किया जाता है। पटियाला घराने के संस्थापक अलीबक्श व फतेह अली, इन दोनों की तालीम बहराम खां के ही पास हुई थी। जयपुर के निकट उणियारा ठिकाने से उठे अल्लादिया खां, जिनके नाम पर अब जयपुर घराना माना जाता है, उनका भी बहुत कुछ संबध जयपुर से है।

अल्लाह के इश्क में पागल हुए सूफियों ने जिस कव्वाली गायन का आश्रय लिया, यह सुप्रसिद्ध है कि इन्हीं कव्वाली गाने वाले कव्वाल बच्चों से ही ख्याल गायकी के घरानों का प्रादुर्भाव हुआ। मुहम्मद अली के चारों लड़कों ने कव्वाली की लय को धीमा बनाते हुए, ध्रुपद के समक्षक विलंबित–द्रुत ख्याल और इनमें से ही अलाप प्रधान ठुमरी गायकी और तान प्रधान टप्पे की गायकी के विकास के लिये सोपान बना दिये।[5]

देश के संगीत हेला ख्याल दंगलों में अपनी अनूठी गायन शैली तथा लोक गायकी की विविध विधाओं के अनूठे प्रदर्शन के कारण लालसोट का हेला ख्याल संगीत दंगल लोक गायकी का अनूठा संगम स्थल बना हुआ है। लोक गायकी में विशिष्टता के कारण 269 वर्षों से लगातार चला रहा यह दंगल राष्ट्रीय स्तर पर लालसोट की पहचान बन चुका है। गणगौर की मध्य रात्रि

से शुरू होने वाले दंगल में स्थानीय गायक मंडलियां भवानी पूजन कर दंगल की औपचारिक करेंगी। वहीं बूढ़ी गणगौर की सवारी निकलने के बाद रात दस बजे से दंगल 36 घंटे तक लगातार चलेगा।यह संगीत दंगल सवाई माधोपुर,दौसा,जयपुर तथा टोंक करौली जिले की सांस्कृतिक धरोहर ही नहीं अपितु हाड़ौती ढूंढाड़ी संस्कृति के संगम के रूप में विख्यात है। हेला ख्याल दंगल को सुनने के लिए मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात, आंध्रप्रदेश कर्नाटक सहित देश के विभिन्न प्रांतों में बसे प्रवासी राजस्थानी समाज के लोग आते है।रजवाड़ा काल में यह हेला ख्याल संगीत दंगल तेल की मशालों के बीच होता था। रजवाड़ों द्वारा तेल उपलब्ध कराया जाता था। पहले इस दंगल में तीन बास (खोहरापाडज्ञ, जोशीपाड़ा, तंबाकूपाडा) व चार बास (उपरलापाडा, लांबापाड़ा, गुर्जर घाटा, पुरोहितपाड़ा) की गायक मंडलियां भाग लेती थी मगर फैलती ख्याति बढ़ते स्वरूप में कारण आज इनकी संख्या 20 हो गई है।[6]

राजस्थानी ख्यालों को ही लीजिये। वे अपनी शैलीगत विशेषताओं की दृष्टि से अपने पड़ौसी राज्यों की लोकनाट्य विद्याओं से अधिक भिन्न नहीं है। उत्तरप्रदेश की नौटंकियां, हरियाणा के स्वांग, गुजराती भवाई वेश तथा मध्यप्रदेश के मांच शिल्प एवं शैली–साम्य की दृष्टि से एक दूसरे से बहुत मिलते जुलते है। हमने इन विद्याओं की सैकड़ो नाट्य पुस्तकों का सांगोपांग अध्ययन किया है और राजस्थानी ख्यालों के प्रायः सभी प्रदर्शन अपनी आंखो से देखे है। उनमें से कुछ तो केवल लिखने के लिये लिखे गये है और कुछ ने तो रंगमंच की शक्ल ही नहीं देखी है। उनकी भाषा अपरिपक्व, छंद रबड़ की तरह खिंचने बढ़ने वाले, धुनें अधकचरी, कथोपकथन अव्यवस्थित, व्यंग अशिष्ट एवं तर्कहीन होते है। सैकड़ों लोकनाट्य पढ़ कर एवं अनेकों प्रदर्शन देखकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ, कि असली लोकनाट्य लिखा ही नहीं जाता। वह रचा जाता है। [7]

'माधव विनोद' को कवि सोमनाथ ने स्वांग न कहकर 'ख्याल' कहा है, यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। वे लिखते है –

'माधव और मालताय के, प्रेम कथा कौ ख्याल।
बरनत सो ससिनाथ कवि, हुकुम पाय ततकाल।''

ऐसी दशा में यह विचारणीय हो जाता है कि यह 'ख्याल' क्या है ? 'हिन्दी शब्द सागर' मे 'ख्याल' शब्द के दो प्रकार से अर्थ किए गये है जो अविकल रूप से यहां उदृधृत किये जाते है –

ख्याल २ : संज्ञा पु. (अ. खयाल) (वि. ख्याली) २ ध्यान। मुहा. – ख्याल करना = सोचना, याद करना। ख्याल पर चढ़ना = दे. 'ख्याल पड़ना'। ख्याल में आना– समझ में आना। ख्याल में रखना–ध्यान रखना। ख्याल रहना – याद रहना। ख्याल में उतरना या उतर जाना – भूल जाना, विस्मृत हो जना। किसी के ख्याल पड़ना – किसी के पीछे पड़ना। किसी को दिक करने पर उतारू होना। उ. –

राधा मन में यहै विचारति।
ये सब मेरे ख्याल परी है, अबही बातन पै
निरूआरति।।[8]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में 'ख्याल' की परिभाषा इस प्रकार से दी जा सकती है कि 'ख्याल' में पात्र अथवा संवाद आदि तत्वों के समावेश होने पर वह लोकनाट्य है, अथवा लोकप्रचलित वह गायन–प्रणाली और लोककाव्य है जिसमें विचार और कल्पनाएँ पद्यबद्ध होती हैं, किसी सीमा तक व्यंग्य भी होता है और जिसके मूल में श्रृंगार और भक्तिरस प्रधानतः निहित रहते हैं, वस्तुतः 'लावनी' को ही 'ख्याल' कहा जाता है।[9]

इन ख्यालों का गाना दो किस्म का होता है – (1) शर्तिया गाना तथा (2) इसमें प्रथम दल जिस भाषा, रंगत तथा विषय में अपना सवाल प्रस्तुत करता है उसी भाषा, रंगत तथा विषय में दूसरे दल को जबाब देना होता है। यही नहीं, खंडन करने वाले पक्ष को राग, ताल, स्वर तथा रदीफ की बारीकियों तक का ध्यान रखना पड़ता है। ये ख्याल आमतौर ये एक ही भाषा में भी देखने को मिलता है।[10]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शर्मा, कल्याण प्रसाद, (1972), करौली क्षेत्र का ख्याल साहित्य, लोककला मंडल, उदयपुर, 1972, पृ. सं. 25*
2. *Regfolkpedia.com राजस्थानी लोक वार्ता ज्ञानपकोष, ख्याल http.://ragfolkpedia.com/ indese. Php? Option = com content & view = article & id = 987 : 2016-02-29-13-3-312 cadit = 26 & itemid = 139 page. 2*
3. *गरवा, दिवाकर (2016) ''राजस्थानी लोक नाट्य ख्याल'' अभिव्यक्ति शोध पत्रिका।*
4. *वही, पृष्ठ 1*
5. *दैनिक भास्कर (29 मार्च,2017) ''269 वर्षों की अनूठी परम्परा है हेला ख्याल संगीत दंगल'' लालसोट।*
6. *सामर, देवीलाल, (1976), ''भारतीय लोकनाट्य वस्तु और शिल्प'', लोक कला मंडल, उदयपुर, पृ. सं. 40*
7. *अग्रवाल, रामनारायण, (1976), ''सांगीत'' एक लोकनाट्य परम्परा, राजपाल एंड संन्स, दिल्ली, पृ. सं. 30.*
8. *वही, पृ.सं. 12*
9. *भानावत, महेन्द्र (1968), ''राजस्थान के तुर्राकलंगी'', लोक कला मंडल उदयपुर, पृ.सं. 5*